भीनमाल-राज.। अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण दिवस पर शिवराज स्टेडियम में कार्यक्रम के दौरान पौधारोपण करते हुए पूर्व विधायक समरजीत सिंह, पूर्व पार्षद प्रेमराज बोहरा, थानाधिकारी, नवकार हॉस्पिटल संचालक जवानाराम चौधरी, शिवराज स्टेडियम संचालक भेरूसिंह राजपुरोहित, ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. शैल, ब्र.कु. कीर्ति, ब्र.कु. किशोर तथा अन्य।

सफीदो-हरियाणा। विश्व पर्यावरण दिवस पर आयोजित 'पर्यावरण जागृति समारोह में सम्बोधित करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. स्नेह। साथ हैं तहसीलदार वजीर सिंह, ब्र.कु. रेखा तथा ब्र.कु. कुसुम।

सोनीपत से.15-हरियाणा। अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण दिवस पर पौधा रोपण करने के पश्चात् एच.एफ.एस. ऑफिसर डॉ. राजेश वत्स को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रमोद बहन।

टुंडला-रामनगर(उ.प्र.)। विश्व पर्यावरण दिवस पर कार्यक्रम के पश्चात् पौधा रोपण करते हुए ब्र.कु. विजय बहन तथा ब्र.कु. बहनें एवं भाई।

जीन्द-हरियाणा। अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण दिवस पर कार्यक्रम के पश्चात् पौधा रोपण करते हुए ब्र.कु. विजय बहन तथा अन्य भाई बहनें।

पात्र देखकर ही दान करो

गतांक से आगे...

तीन प्रकार की तपस्या की तरह तीन प्रकार के दान भी होते हैं। दान देना एक कर्त्तव्य माना गया है समाज में। जो दान योग्य स्थान और समय देखकर, योग्य पात्र को दिया जाता है, जिसमें प्रति उपकार की अपेक्षा नहीं होती वह दान सात्विक दान माना जाता है। दान करके उसके साथ भी हम एक ज्वाइंट एकाउंट क्रियेट कर लेते हैं तो उसका किया गया पाप हमें भी पाप के भाग में खींच ले जाता है। जो दान क्लेश पूर्वक तथा प्रति उपकार के उद्देश्य से और फल की कामना रखकर दिया जाता है वह दान राजस दान है। जहाँ प्राप्ति की इच्छा है, जो दान बिना सत्कार किये, तिरस्कार पूर्वक, अपवित्र स्थान, अनुचित समय में कुपात्र को दिया जाता है, वह दान तामस दान माना गया है।

-ब्र.कु.ऊषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

आज एक व्यक्ति गरीब है, उसकी स्थिति को देखते हुए हमें दया आती है और हमने उसको दस रुपये दे दिये। सोचा चलो मेरा तो पुण्य जमा हो गया। मैंने तो दान कर दिया ना। लेकिन ज़रूरी नहीं है कि उससे पुण्य का खाता ही जमा हुआ। वो निर्भर इस बात पर करता है कि वो व्यक्ति दस रुपये का इस्तेमाल किस तरह से करता है। मानो उस दस रुपये से उसने एक चाकू खरीदा और चाकू से किसी का खून कर दिया। तो उसने जो पापकर्म किया, उस पापकर्म के भागीदार हम भी बन गए। क्योंकि मैंने दिया तब उसने किया। अगर मैं नहीं देता तो शायद वह करता भी नहीं।

इस प्रकार कलियुग में जाने-अनजाने में बहुत पापकर्म हो गए हैं। एक तो जानकर होता है कि हमने झूठ बोला, किसी को दु:ख दिया तो ये पापकर्म के खाते में चला जाता है। लेकिन जो अनजानेपन के पापकर्म होते हैं, वो इस प्रकार होते हैं। कहा जाता है कि कलियुग में पात्र देखकर दान करो, नहीं तो दान न करना ज़्यादा अच्छा है। कुपात्र को देकर समाज में और भी कुकर्म को बढ़ावा देने के बजाए अच्छा रहे कि दान न करें।

एक बार एक व्यक्ति रोज़ मछली पकड़ने जाता था। जब वो मछली पकड़कर ले आता था तो एक नौजवान व्यक्ति हमेशा भीख मांगने के लिए खड़ा हो जाता था। ये व्यक्ति सोचता था कि चलो इतनी मछली पकड़ी है, तो इसको थोड़ा दे देता हूँ। वह भी अपना पेट भरेगा। एक दिन आया कि किसी ने उसको कहा कि तू रोज़ उसको दे रहा है और उसको आलसी बनाता जा रहा है। क्यों नहीं उसको भी मछली कैसे पकड़ी जाती है ये सिखाया जाए। तो वह अपने आप, कम-से-कम इतनी मेहनत करके, अपना पेट तो भरेगा। आज की दुनिया में भी ऐसा हो गया है। हमने कई बार किसी को देकर के सोचा, चलो मेरा काम हुआ, मेरे को थोड़ा दान का पुण्य मिल गया। इस तरह से हम देते जाते हैं। लेकिन हम ये नहीं सोचते हैं कि सामने वाले पात्र को आलसी तो नहीं बना रहे हैं? इस तरह से अगर आलसी बनाते जायेंगे, तो आगे चलकर उनके मन में कई प्रकार की विकृतियां उत्पन्न होंगी। - क्रमश:

यह... जीवन है...!

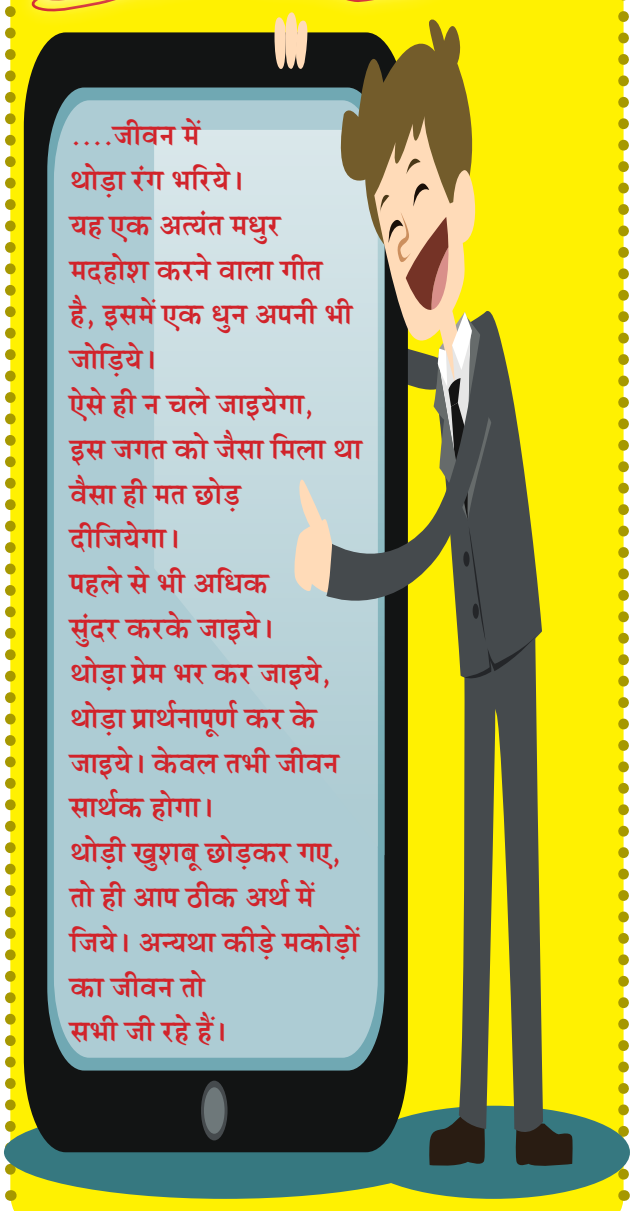

ख्यालों के आईने में...

चरण उनके पूजे जाते हैं, जिनके आचरण पूजने योग्य हों, अगर इन्सान की पहचान करनी हो तो सूरत से नहीं, चरित्र से करो...

क्योंकि सोना अक्सर लोहे की तिजोरी में ही रखा जाता है।

घर से दरवाज़ा छोटा, दरवाज़े से ताला छोटा, ताले से चाबी छोटी! पर छोटी सी चाबी से पूरा घर खुल जाता है!

उसी प्रकार समस्या कितनी भी बड़ी क्यों न हो, उसका समाधान एक छोटे से समर्थ संकल्प में ही होता है। इसलिए सदा समर्थ सोचें।